RESEARCH EXPRESSION ISSN 2456-3455 Vol. II, Issue 2 and 3, March and September 2017

ग्रामीण परिवेश में ई–शिक्षा की स्थिति का मूल्यांकन

अमर नाथ शर्मा*
समाजशास्त्र विभाग, शासकीय महाविद्यालय, बोरी, दुर्ग (छग).

शोध–सारांश

आज तीसरी दुनिया में प्रौद्योगिकी का साम्राज्य स्थापित हो चुका है। एक तरफ संस्कृति के भौतिक पक्ष ने समाज के सभी क्षेत्रों (शैक्षणिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक इत्यादि) अपने नवीन संसाधनों से उनकी संरचना को बदल डाला है, वहीं दूसरी ओर अभौतिक पक्ष ने मानव को मशीन बना डाला है। अब हमारी पुरानी रीति–रिवाज, नातेदारी प्रथा, कानून इत्यादि सभी ऐतिहासिक हो चुके हैं एवं इनके स्थान पर प्रौद्योगिकी युक्त नये मूल्य व प्रतिमान स्थापित हो गये हैं। मोबाइल फोन, स्मार्ट फोन, टेबलेट, आईपैड, इंटरनेट, सोशल मीडिया इत्यादि हमारे शुरुआती दिनों से अब तक हमारे जीवन का हिस्सा हो चुके हैं।

सामाजिक व्यवस्था का प्राथमिक पक्ष शिक्षा है जो मानव को सत्य एवं असत्य में भेद करना सिखाती है, उसने भी प्रौद्योगिकी से जुड़कर "ई–शिक्षा" का स्वरूप प्राप्त कर लिया है। शिक्षा स्थानीय न होकर वैश्विक हो गई है। प्रशिक्षक, प्रत्यक्ष शिक्षक न होकर परोक्ष रूप से "रोबोट" हो गये हैं। आज "ई–शिक्षा" का प्रभाव शहर के साथ–साथ ग्रामीण क्षेत्रों में कहीं पूर्णतः तो कही अंशतः देखा जा सकता है। ई–शिक्षा पद्धति जीवन के हर पक्षों को किस तरह प्रभावित कर रही है और ग्रामीण परिवेश में इसकी क्या प्रासंगिकता है, यही जानने का प्रयास प्रस्तुत शोध पत्र में किया गया है।

कुंजी शब्द : ई–शिक्षा, ई–लर्निंग, प्रौद्योगिकी, संस्कृति, रोबोट।

भूमिका

जनसंख्या के दृष्टिकोण से भारत आज चीन के बाद विश्व का दूसरा सबसे बड़ा देश है। यहाँ देश की आधी से ज्यादा आबादी युवाओं की है। देश में 1.4 मिलियन स्कूल, 3500 कॉलेज और 600 विश्वविद्यालय हैं। आज आजादी के 71 वर्ष बाद भी शत–प्रतिशत शिक्षा के लिए भारत संघर्षरत है। प्रौद्योगिकी के युग एवं वैश्वीकरण की प्रक्रिया में भारत की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। यहाँ प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक में समानता लाने हेतु शिक्षक, अभिभावक एवं छात्र को विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं समाज से पारिवारिक होना ही होगा।

ई–शिक्षा की महत्ता दिनों–दिन बढ़ती जा रही है क्योंकि–

- घर बैठें ही 'ऑनलाइन' से किसी विषय की जानकारी प्राप्त की जा सकती है।
- विद्यार्थी जिनके शहर में उक्त पाठ्यक्रम नहीं है, जो विद्यार्थी बाहर जाकर पढ़ाई नहीं कर सकते, वह भी शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।
- "ई –शिक्षा" के अर्न्तगत कम्प्यूटर भंडारण, बढ़िया साधन है। कम्प्यूटर एवं मोबाइल में अनेक पुस्तकों को डिजिटल फार्म में रखकर कहीं भी पढ़ सकते हैं।
- विद्यार्थी अपने नोट्स तैयार करने में MS-Office, Excel, Power Point, प्रशिक्षक से मदद ले सकते हैं।
- विद्यार्थी कहीं भी अपने शिक्षकों–दोस्तों से सम्पर्क, विडियो कॉल, ई–मेल, सोशल नेटवर्किंग जैसी सुविधाओं से जुड़ सकते हैं।
- "ई–शिक्षा" के अन्तर्गत किसी तथ्य/किसी व्यक्ति या समूह से सम्बन्धित वास्तविक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।
- "ई–शिक्षा" का बहुत बड़ा बाजार है। इस दिशा में संभावनाएँ बड़े–बड़े कॉलेजों यथा IIT, NIT, IIIT, मेडिकल, मैनेजमेंट इत्यादि में अनेक कार्यशालाएँ आयोजित की जाती हैं।

*Corresponding Author: Email: amarnathsharma23@gmail.com • Mobile No. 09424113202

साहित्य समीक्षा

शिव कनौजिया ने अपने अध्ययन (E-Education in India) में बताया है कि भारत में ई–शिक्षा कोई नई अवधारणा नहीं है बल्कि इसका विकास इंटरनेट के आने के पश्चात् हुआ है। ई–शिक्षा के अन्तर्गत एक स्थान के "मूल तथ्य" को दूसरे स्थान पर घर बैठा विद्यार्थी आसानी से इंटरनेट के माध्यम से प्राप्त कर सकता है।

निलय एम, याजनिक ने (E-Learning Technology in India) में आने वाली पीढ़ी के बीच ई–शिक्षा की स्थिति के बारे में चर्चा की है और बताया है कि डिजिटल लाइब्रेरी, विडियो के साथ लेखक से वार्तालाप/चर्चा इत्यादि घर बैठे ही हो सकेंगे। ई–शिक्षा के लिए किसी भवन का होना अनिवार्य नहीं है।

जय सिंह वी. झाला (सोशल मीडिया और समाज) में बताया है कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया का श्रेय जनसंचार माध्यम को जाता है जो सामाजिक, सांस्कृतिक परम्पराओं, रूढ़ियों की जटिलताओं को क्षीण करते हुए, मिली–जुली संस्कृति एवं नये मानव मूल्यों (ई–शिक्षा, ई–शासन इत्यादि) की स्थापना कर रहा है।

उद्देश्य : "ग्रामीण परिवेश में ई–शिक्षा की उत्प्रेरकीय स्थिति को जानना"।

शोध प्रविधि : प्रत्येक कार्य के अपने तकनीक व प्रविधियाँ होती हैं, जो निश्चित उद्देश्यों पर आधारित होती हैं। "ई–शिक्षा" भी आज के समाज की नवीन देन है। वर्तमान अध्ययन गत्यात्मक समाज में ई–शिक्षा की उत्प्रेरकीय स्थिति को जानने से सम्बन्धित है। यह वर्णात्मक शोध प्ररचना पर आधारित है।

उत्तरदाताओं का चयन : दुर्ग जिले के ग्रामीण महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्रों से दैव–निदर्शन के आधार पर 50 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। प्राप्त आँकड़ों के अध्ययन पर समाजशास्त्रीय विश्लेषण किया गया है।

तथ्य संकलन : प्राथमिक स्रोत के अन्तर्गत साक्षात्कार अनुसूची, अवलोकन तथा द्वितीयक स्रोत के अन्तर्गत पाठ्यपुस्तक, समाचारपत्र, पुस्तकालय, वेबसाइट इत्यादि का उपयोग किया गया है।

तथ्य विश्लेषण एवं व्याख्या

भारत, सूचना प्रौद्योगिकी आई.टी. से सम्बन्धित उपयोग के क्षेत्र में एक अग्रणी देश बन चुका है, विशेषकर आई.टी. सेवाओं तथा सॉफ्टवेयर विकास के क्षेत्र में। बी.पी.ओ या आई.टी.ई.एम. में भी भारत नेतृत्व कर रहा है। हाल के दिनों में भारतीय सॉफ्टवेयर तथा भारतीय बी.पी.ओ. भारत के प्रमुख विकसित एवं उन्नत उद्योग बन गये हैं। वहीं यह सत्य है कि आज दुनिया के टॉप 100 विश्वविद्यालयों में भारत का कोई भी विश्वविद्यालय गिनती में नहीं है, आखिर क्यों? आज दुनिया में सबसे बेरोजगार युवा भारत में हैं जिनमें भारत की 60% आबादी शहर में तो 40% आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित है।

भारत सरकार ने हाल ही में ग्रामीण क्षेत्र के अनुसूचित जाति एवं जनजाति समुदायों तथा महिलाओं को ई–साक्षर बनाने के लिए ई–समावेश परियोजना (E-project) की शुरुआत की है। इस संबंध में सूचना प्रौद्योगिकी एवं प्रसारण मंत्रालय ने 'ई–लिटरेसी–टूवर्ड्स इम्पावरिंग रूरल इंडिया' नाम से हस्तपुस्तिका जारी की जिसमें ई–समावेशन परियोजना के तहत मूलभूत सूचना प्रौद्यौगिकी प्रशिक्षण लेने के 500 विशिष्ट लाभार्थियों का उल्लेख है।

स्वतंत्रता के प्रारंभिक काल से ही निरक्षरता उन्मूलन एक प्राथमिक कार्य रहा है। मार्च 1995 के दूसरे सप्ताह के दौरान कोपेनहेगन में आयोजित सर्वाधिक आबादीयुक्त 9 देशों में सबके लिए शिक्षण (EFA) विषय का शिखर–सम्मेलन आयोजित किया गया जिनमें मुख्य रूप से 14 वर्ष तक की आयु के बच्चों को अनिवार्य शिक्षा, ड्रापआउट का पता कर पुनः विद्यालय में भेजना मुख्य थे। आज 21वीं शताब्दी के युग में कम्प्यूटर/ई–शिक्षा तेजी से बढ़ रही है परन्तु उच्च शिक्षा के तकनीकी, व्यावसायिक एवं चिकित्सीय क्षेत्र में सामान्य शिक्षा के तहत आर्थिक रूप से प्राइवेट/शासकीय विद्यालयों में प्राथमिक शिक्षा में नगण्य है।

आज भारत में ई–शिक्षा का मार्केट लगभग 3 अरब डालर का अनुमान है और यह बढ़ ही रहा है। उदाहरण के लिए बड़े ऑनलाइन कोर्स 10 लाख उपयोग कर्ताओं के साथ भारत का अपने गृह आधार के बाद ऑनलाइन विद्यार्थियों का सबसे बड़ा स्रोत चीन के साथ संबंध रखना है। साक्षात्कार अनुसूची से प्राप्त आँकड़ों को निम्न तालिकाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 1 : ई–शिक्षा में सामग्री की प्रचुरता

क्रमांक	मनोवृत्ति	आवृत्ति		प्रतिशत	
		छात्र	छात्राएँ	छात्र	छात्राएँ
1.	पूर्णतः सहमत	03	04	12.00	16.00
2.	सहमत	12	15	48.00	60.00

3.	तटस्थ	04	02	16.00	08.00
4.	असहमत	06	04	24.00	16.00
5.	पूर्णतः असहमत	00	00	00	00
	योग	**25**	**25**	**100**	**100**

सारणी 2 : ई–शिक्षा के अन्तर्गत रोजगार के प्रति मनोवृत्ति

क्रमांक	जानकारी	आवृत्ति		प्रतिशत	
		छात्र	छात्राएँ	छात्र	छात्राएँ
1.	हॉ	18	23	72.00	92.00
2.	नहीं	07	02	28.00	08.00
	योग	**25**	**25**	**100**	**100**

अध्ययन से प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण से जो निष्कर्ष उभरे हैं वे निम्न हैं –

1. ई–शिक्षा में कक्षा आाधारित शिक्षा से अधिक सामग्री प्राप्त होती है।
2. ई–शिक्षा एवं रोजगार की जानकारी के प्रति उत्तरदाताओं 72% छात्रों एवं 92% छात्राओं का मानना है कि शिक्षक, शोध व परियोजना, डाटाएन्ट्री, डिजिटल मार्केटिंग में रोजगार प्राप्त किया जा सकता है।
4. सभी उत्तरदाता स्वीकार करते हैं कि ई–शिक्षा के लिए कम्प्यूटर, लेपटॉप, टेबलेट, स्मार्टफोन की पूर्ण जानकारी आवश्यक है।
5. सभी उत्तरदाता स्वीकार करते हैं कि कम्प्यूटर की बेसिक जानकारी के अभाव एवं स्मार्टफोन की सहज उपलब्धता के कारण मात्र वाट्सऐप, फेसबुक, गेम इत्यादि ऐप का प्रयोग ही अधिक करते हैं।
6. सभी उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया है कि इन्टरनेट–जनित सुविधाओं में ऐप का अधिक प्रयोग करने से समयाभाव की स्थिति आ गई है, परिणामतः उनमें चिड़चिड़ापन, क्रोध इत्यादि दिखाई देते हैं।
7. ई–शिक्षा से परिचित उत्तरदाताओं का मानना है कि कम्प्यूटर आधारित पाठ्यक्रम में प्रवेश से स्वज्ञान एवं आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है।

ई–शिक्षा से नुकसान

1. इसमें बिना शिक्षित शिक्षार्थियों या खराब अध्ययन की आदतों वाले लोग पीछे हो सकते हैं।
2. प्रत्यक्ष सामाजिक क्रिया का अभाव हो जाता है फलतः नातेदारी का अभाव प्रदर्शित होता है।
3. प्रशिक्षक हमेशा माँग पर उपलब्ध नहीं हो सकते हैं।
4. यह एक निश्चित आकार में फिट नहीं होते अर्थात् इसकी प्रकृति व्यापक है।
5. सीखने के क्रम में आगे सॉफ्टवेयर की भी जानकारी आवश्यक होती है।
6. रोजगार के क्षेत्र में नियोक्ता कर्मचारियों को स्वयं के समय और अपने तरीके से सीखने के लिए नियंत्रित कर रहे हैं।

सुझाव

इस शोध के आधार पर कुछ सुझाव दिये जा सकते हैं–

1. ई–शिक्षा तथा संकलन, अध्ययन, परीक्षा, रोजगार सभी क्षेत्रों के लिए उपयोगी है किन्तु इसमें सामाजिक मूल्य की नितांत आवश्यकता है।
2. कुछ वेबसाइट यू–ट्यूब इत्यादि को खोलने के लिए रजिस्टर्ड कोड का प्रावधान होना चाहिए।
3. ई–शिक्षा के अन्तर्गत अभिभावक–शिक्षक में जागरूकता लाने हेतु प्रचार प्रसार आवश्यक है।

उपरोक्त विश्लेषण एवं द्वितायक स्रोतों से प्राप्त आँकड़ों के आधार पर कहा जा सकता है कि भारत की वर्तमान शैक्षिक अधो–संरचना देश की वर्तमान और भविष्य की जरूरतों को पूरा नहीं कर सकती है। अधिक आबादी होने के बावजूद भारत को 2022 तक 250 मिलियन कुशल श्रमिकों की कमी का सामना करना पड़ सकता है। इसके अतिरिक्त आज तेजी से बदलती हुई आवश्यकताओं के प्रासंगिक होने के लिए पारंपरिक शिक्षा के रूप को बदलना विफल रहा है। इसके अलावा कौशल की एक पूरी दुनिया है जो पारस्परिक शिक्षा प्रणाली

के दायरे में नहीं है। ई–शिक्षा हमारी शिक्षा समस्या को कम करने में भूमिका निभायेगा। ज्यादातर मामलों में भारत के शिक्षार्थियों की संख्या अमेरिका के बाद दूसरे स्थान पर है। मौजूदा वैश्विक प्रौद्योगिकी, सामग्री सेवाओं को पर्याप्त नहीं कहा जा सकता बल्कि अन्य उद्योगों की तरह भारत में प्रासंगिक करने के लिए ई–शिक्षा को भारत के अनुकूल नवीन बनाना है। तत्पश्चात् भारतीय समाज पर योजनाबद्ध परिवर्तन देखे जा सकेंगे।

Works Cited

1. Chen Xin, "E-learning Applications and Challenges", 1EEEPURE 2000.
2. Shiva Kannaujiya, N.R. Satyanarayana. E-Education in India: Pace of learning on a Hi- Tech. Path, New Delhi, 2004.
3. Nilay M. Yagnik, E-learning Technology for Rural India. http://www cdac edunet.in html/pdf/session 2.3
4. Deep Shikha Agrawal, Role of E-learning in a Developing Country Line India's New Delhi India's.com. 2005.
5. E-learning and its Impact on Rural Areas Rimmi Anand, Sanad Saxenas, Shilpi Saxena http// www. mecs-press.org-2012.